10/-

# सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण

—पुरुषोत्तम

## सूफियों द्वारा भारत का इस्लामीकरण – पुरुषोत्तम

12 जुलाई, 1992 पान्चजन्य ( दिल्ली ) में वरिष्ठ पत्रकार स्व.गिरिलाल जैन का एक लेख " इस्लाम में भर्ती करने वाली संस्था " शीर्षक से छपा था । उसमें उन्होंने कहा था:
" अक्सर लोगों को इस बारे में वहम हो जाता है कि हिन्दुस्तान में जो मुसलमान सूफी, फकीर या पीर हुए हैं, वे इस्लाम पर भारतीयता या हिन्दुत्व के असर के प्रतीक हैं । यह इतिहास की समझ न रखने वाले और इन सूफियों के बारे में कोई तथ्यात्मक जानकारी न रखने का परिणाम है । क्योंकि ये सूफी या फकीर चाहे और जो भी हों, लेकिन भारतीयता या हिन्दुत्व के निकट नहीं हैं, न ही ये इस्लाम और हिन्दुत्व के मध्य भाई चारे या मेलजोल का द्विमार्गी पुल है । पुल अगर इन्हें कहा भी जाए तो इसे एक मार्गी पुल ही कह सकते हैं, जिस पर होकर हिन्दू तो इस्लाम की ओर जा सकते हैं , पर इस्लाम से हिन्दुत्व की ओर कोई सफर नहीं हो सकता । इस लिहाज से मैं सूफियों और पीरों को इस्लाम में भर्ती करने वाली संस्था ही मानता हूँ और मेरी चुनौती है कि कोई इसके विपरीत तथ्य नहीं ला सकता है ।"
सूफियों के कारनामों की दो अग्रेजी पुस्तकें हाल ही में प्रकाशित हुई हैं : सैय्यद अथर अब्बास अली रिजवी की पुस्तक " द हिस्ट्री ऑफ सूफिज्म इन इंडिया " । इस पुस्तक के लगभग 700 पृष्ठों के लगभग दो खण्ड हैं । दूसरी पुस्तक " श्राइन एण्ड कल्ट ऑफ मोइनुद्दीन चिश्ती ऑफ अजमेर है । लेखक हैं पी. एम. करी । सै. अबुल हसन अली नदवी की पुस्तक " मुस्लिम्स इन इंडिया " और डॉ. के एस. लाल की दो पुस्तकें " इंडियन मुस्लिम्स व्हू आर दे " और " लीगेसी ऑफ मुस्लिम रूल इन इंडिया " भी इस विषय पर पर्याप्त प्रकाश डालती है । यहाँ हमने मुख्यतया इन्ही पुस्तकों को आधार बनाया है ।
कुछ लोगों का विश्वास है कि सूफिस्म भारतीय दर्शन के भक्ति और ध्यान योग की ही उपज है जिसका प्रभाव इस्लाम के पदार्पण से पहले मध्य एशिया और उसके आसपास के क्षेत्रों में व्यापक रूप से हो गया था । चाहे भारतीय दर्शन की सूफिज्म के विकास में कोई भूमिका रही हो या न रही हो, सूफी मुस्लिम हर

प्रकार से कट्टर धर्मनिष्ठ मुसलमान होते है और हिन्दू काफिरों , मूर्ति पूजकों इत्यादि को इस्लाम में दीक्षित करना अथवा उनको समूल नष्ट करना, अपना मुख्य धार्मिक कर्तव्य समझते है। सूफियों की अनेक परम्पराएं हैं । इनके ध्यान, कीर्तन आदि के तरीकों में अनेक भेद हो सकते है परन्तु हिन्दुओं के प्रति उन सबका दृष्टिकोण वही है जो कि एक धर्मनिष्ठ मुसलमान का होना चाहिए ।

1000 ई. के बाद, भारत के इस्लामीकरण का जो दूसरा चरण प्रारंभ हुआ उसमें एक ओर तो महमूद गजनवी से प्रारंभ होकर दूसरे अनेक आक्रामक तलवार और कुरान लेकर भारत में घुसे अथवा उनके वंशजों ने भारत में इस्लाम का विस्तार तलवार के बल पर किया । दूसरी ओर सूफी लोग मुँह में भजन, कीर्तन, चमत्कार, के दावे और बगल में तलवार और कुरान लेकर आए । इनमें से अधिकांश ने प्रकट रूप से तलवार का उपयोग नहीं किया किन्तु कुछ ऐसे भी थे, जो आवश्यकता पड़ने पर तलवार लेकर स्वयं भी जिहाद में उतर पड़ते थे ।

सूफी इतने शक्तिशाली थे कि मुगलकाल के पतन के समय जब मेवाड़ और मारवाड़ के राजपूत स्वतंत्र हो गए , तब भी वे नागौर में सूफियों के प्रभाव को कम नही ंकर सके ।

जब अलाउद्दीन खिलजी ने दक्षिण में देवगिरी विजय किया तो सैकड़ों सूफियों ने वहां जाकर अपनी खानकाहें स्थापित कर लीं और धर्मान्तरण के कार्य में लग गए । इनमें से कुछ ने खुलकर हिन्दुओं के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया और इतने हिन्दुओं का वध किया कि उनके नाम के साथ कत्ताल और कुफ्फार भंजन जैसे शब्द जुड़ गए ।

कुछ दूसरे ऐसे भी थे जो वर्षों तक जंगलों में योग साधना और तपस्या करते थे । धीरे धीरे जब उनकी योगी, तपस्वी ब्रह्मचारी होने चमत्कार करने की ख्याति आसपास की हिन्दु जनता में फैल जाती थी तो हिन्दू उनके भक्त बनने लगते थे और फिर आंरभ होता था वही धर्माण्तरण का सिलसिला ।

महमूद गजनवी ने 1001 से 1029 ई. तक भारत पर अनेक आक्रमण किए । इन आक्रमणों के प्रारंभ करने के पहले उसने धार्मिक शपथ ली थी कि वह भारत से मूर्ति पूजा का चिन्ह मिटाकर वहाँ के समस्त निवासियों को इस्लाम में दीक्षित करेंगा । महमूद गजनवी के आक्रमणों के साथ साथ मध्य एशिया से बहुत से

सुन्नी , सूफी व शेख, भारत में आकर बसने प्रारंभ हो गए । ग्यारवीं शताब्दी के मध्यम तक सूफी लोग पंजाब और उसके आसपास के इलाकों में फैलकर अनेक स्थानों पर जम गए थे ।
बंगाली लड़ाकू सूफियों में एक मुख्य नाम है सिलहट के शेख जलाल का । " गुलाल ए अबरार " के अनुसार, शेख जलाल जन्म से तुर्किस्तानी थे और सिलसिले ख्वाजगान के सैय्यद अहमद मसावी के खलीफा थे । उनकी विनती पर जलाल के पीर ने उन्हें आशीर्वाद दिया था कि वह जिस प्रकार आत्मिक जिहाद में विजयी हुए हैं, उसी भांति " दारुल हर्ब " ( काफिरों के देश ) में भी कुफ्र के विरुद्ध जिहाद में सफल हों । सैय्यद ने अपने प्रतिभाशाली 700 शिष्यों को शेख जलाल के साथ इस मिशन पर भेजा । यह कोई शांतिपूर्ण धर्म प्रचार नहीं था । युद्ध में मिली लूट से वे ऐश का जीवन बिताते थे ।शेख जलाल मार्ग में विजय किए गए क्षेत्रों में इस्लाम के प्रचार के लिए अपने साथियों को छोड़ते जाते थे । जब वे सिलहट पहुँचे तो उनके साथ केवल 313 साथी रह गए थे । वहाँ उनका राजा गौढ़ गोविन्द की कई लाख पैदल सेना और कई सहस्र घुड़सवारों की सेना से भयानक युद्ध हुआ और शेख जलाल विजयी हुए । उन्होंने विजित क्षेत्र को अपने साथियों में बाँट दिया , वहाँ की औरतों से विवाह कर लिया और वहीं बस गए । शेख जलाल के बारे में अनेक चमत्कारी कहानियाँ प्रसिद्ध हो गयीं । जैसे कि वह प्रातःकाल की नमाज मक्का में पढ़कर आते थे । इन चमत्कारी बातों से प्रभावित होकर मुलसमान हो गए । शेख जलाल और उसके तुर्किस्तानी शिष्य मध्य ऐशिया के ख्वाजगान और नक्शबन्दिया ऐसे सूफी थे जो कि वह यदा कदा कुछ वर्ष तलवार लेकर जिहाद करते थे और हिन्दुओं का धर्माण्तरण करते थे । शत्तरिया, कादिरइया, और नक्शबन्दिया, सिलसिले के सूफी, जिन्होंनें 18 वीं शताब्दी में भारत में अपनी खानकाहें स्थापित करनी प्रारंभ कर दी थीं , अपने पूर्वजों द्वारा मध्य ऐशिया और फारस के इस्लामीकरण के अनुभवों से खूब परिचित थे और उस धर्म परिवर्तन के अनुभव का प्रयोग उन्होंने अपने को हिन्दुस्थान की परिस्थितियों में ढालकर किया । इन्होंने बंगाल से लेकर मालवे तक अपनी खानकाहें स्थापित कीं । इनके शिष्य वहाँ से पश्चिमी गुजरात तक फैल गए ।

सुहरावर्दिया , शेख जलालुद्दीन सिमानी, मीर सैय्यद अली हमदानी और उसके पुत्र मीर मौहम्मद की खानकाहों में जिन अनेक सूफियों को ट्रेनिंग दी जाती थी, उनका मुख्य ध्येय हिन्दुओं को मुसलमान बनाना था । इनमें से कुछ से हमारी भेंट अपने पन्नों में होगी ।
इन सूफियों ने न केवल भारत में हिन्दुओं, बौद्धों और जनजातियों का बड़े पैमाने पर धर्माण्तरण किया , अपितु बंगाल होते हुए दक्षिणी पूर्वी एशिया के हिन्दू और बौद्ध उपनिवेशों जावा, सुमात्रा, मलाया इत्यादि में जाकर वहाँ के राजाओं का धर्माण्तरण कर इन देशों को मुस्लिम देश बना दिया ।
भारत का वह काल , उसकी अवनति का काल था । वेदों उपनिषदों के काल का जगद्गुरु भारत अपने उस काल के ज्ञान को भुलाकर अन्ध विश्वासों और कुरीतियों का शिकार हो चुका था । हिन्दू समाज में मूर्तिपूजा, अंधविश्वास, छुआछूत, जातिवाद जैसे दोष घर कर गए थे । ईश्वर और मोक्ष प्राप्ति के अलग सहज उपाय बताने वाले लाखों अधिकतर छद्म वेषधारी, साधु, सन्यासी, तांत्रिक, अघोरी इत्यादि लोगों ने अपने भक्तों के अलग अलग सम्प्रदाय बना लिए थे । न कोई केन्द्रीय राज्य शक्ति रह गयी थी और न कोई केन्द्रीय धार्मिक शक्ति की विचारधारा, जैसी कि वेदकालीन भारत में थी । ऐसी दशा में जहाँ महमूद गजनवी की सुशिक्षित, अनेक युद्धों की अनुभवी लड़ाकू सेना को रोकना कठिन हो गया था, वहीं सूफियों की चमत्कारी घोषणाओं में अंधविश्वासी हिन्दुओं ने सहज ही विश्वास कर लिया । जहाँ रोज ही नए देवी देवता, नई पूजा पद्धति, नई ध्यान विधि, नए गुरू, नए अवतारों और नई संस्कृतियों का आविष्कार हो रहा हो, वहाँ एक और नई पूजा पद्धति, ध्यान विधि अथवा संस्कृति को चुपचाप प्रवेश पाना कौन कठिन कार्य था ?

1. **बहराइच का सलार महमूद गाजी**

**उन सूफियों में जो तलवार लकर भारत के इस्लामीकरण के लिए इस देश में घुसे एक विशेष नाम है शहीद सिपहसालार मसूद गाजी का जिसका साधारणतया गाजी मियाँ के नाम से जाना जाता है ।** इसकी वास्तविक मजार उत्तर प्रदेश के पूर्वी जनपद बहराइच में है ।

यह सुल्तान महमद गजनवी की बहिन का पुत्र था और सोमनाथ के मन्दिर को तुड़वाने के लिए महमद को उसने ही प्रेरित किया था । इसने अपने पिता और घुड़सवारों के साथ गजनी से चलकर पंजाब में प्रवेश किया। मार्ग में लूट के लोभ में अनेक नवधर्मान्तरित मुसलमान इसके साथ जुड़ते गए । प्रारम्भ से हिन्दुओं के सामने इसका एक ही प्रस्ताव था '' इस्लाम या मृत्यु '' । जिस स्थान से चलकर यह पंजाब से बहराइच पहुँचा उस मार्ग पर आज सहस्रों मजारें उसके उन साथियों की हैं जो हिन्दुओं से युद्ध करते उस स्थान पर मारे गए । उ**न सबके नाम के साथ गाजी, शहीद, पीर अथवा बाबा आदर सूचक शब्द जोड़ दिए गए हैं ।** गाजी अर्थात काफिर का वध करने वाला । शहीद अर्थात् काफिर के हाथ से धर्मयुद्ध में मारा जाने वाला । पीर अर्थात् चमत्कारिक गुरु । बाबा अर्थत् साधु , फकीर अथववा आदरणीय गुरु । बहुत बाद में अंग्रेजी काल में ये शब्द उन लोगों नाम के साथ जोड़ दिए गए जिन्हें साम्प्रदायिक दंगों अथवा हिन्दुओं के कत्ल के आरोप में अंग्रेजी शासन द्वारा मृत्यु दण्ड दिया गया ।

हिन्दुओं को मुसलमान न बनने पर, कत्ल करने वाले लोग, हिन्दुओं के उपास्य कैसे बन गए हैं, उसके दो उदाहरण पर्याप्त होंगे ।

**लखनउ का खम्मन पीर बाबा**

सलार मसूद के तलवार अथवा इस्लाम अभियान में मारे गए सहस्रों लोगों की अनेक मजारों में दो मजारें लखनउ के हिन्दू निवासियों की अभी कुछ 235 – 730 वर्षों से अत्यन्त श्रद्धा और पूजा की केन्द्र बन गयी है । एक है चारबाग का खम्मनपीर बाबा। इसकी मजार लखनउ जंक्शन में रेल की पटरियों के बीच बनी है । पहले इसका कोई नाम भी नहीं जानता था । इधर निछले 25 – 30 वर्षों से इसके सहस्रों हिन्दु भक्त बन गए हैं और सरकारी भूमि घेरकर इसका

अपूर्व विस्तार कर लिया गया है । सप्ताह में एक दिन मेला लगता है और लखनउ जंक्शन का स्वाभाविक कार्य अस्त व्यस्त हो जाता है । सहस्रों हिन्दू रेल की पटरियों को कूदते फाँदते मजार पर जाते आते हैं । वहाँ पर लगे एक पत्थर के अनुसार ( मनोहर कहानियाँ के अनुसार ) " ये गाजी मियाँ के साथ आए थे और इसस्थान पर युद्ध करते हुए मारे गए ।

**दिलकुशा लखनऊ का हजरत शहीद कासिम बाबा**

लखनऊ चारबाग में स्थित खम्मन परबाबा की मजार की तरह दिलकुशा में स्थित हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार भी हिंन्दुओं की विशेष श्रद्धा की केन्द्र है । मायावती सरकार का मंत्री राजभर अपने रोगों से पीछा छुड़ाने हेतु इस दरगाह की शरण में जाता रहा है । ( दैनिक जागरण 6–9–1995 )

खम्मन पीर बाबा की तरह कासिम बाबा भी शहीद सलार मसूद गाजी के साथ समस्त भारत निवासियों को तलवार के बल पर मुसलमान बनाने के इरादे से आया था और उसी तरह हिन्दुओं से युद्ध करते हुए लखनऊ में मारा गया । इसी लिए उसके नाम के साथ शहीद शब्द मुसलमानों ने जोड़ा ।

दैनिक जागरण लखनऊ 25.07.1994 के अनुसार दिलकुशा गार्डेन स्थित हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार पर चादर चढ़ाकर श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद वहाँ आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए **श्री बोरा गवर्नर उत्तर प्रदेश ने कहा कि भारत में ऋषि मुनियों और सूफी सन्तों ने मानवता की जो सबसे बड़ा संदेश दिया है वह किसी देश, धर्म, जाति और सम्प्रदाय तक ही सीमित नहीं है । हजरत शहीद कासिम बाबा ने भी मानव जाति के उद्धार के लिए धर्म , जाति , भाषा और क्षेत्र की संकीर्णताओं के ऊपर उठकर प्रेम, एकता, और मानवता का पैगाम दिया है** । उनहोंने प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मुलायम सिंह यादव ने हजरत शहीद कासिम बाबा की मजार तक सम्पर्क मार्ग निर्मित करा दिया है तथा वहाँ बिजली पानी की भी समुचित व्यवस्था करा दी है ।

उसी समारोह को सम्बोधित करते हुए श्री मुलायम सिंह यादव भू0 पू0 मुख्यमंत्री उ0 प्र0 तथा पूर्व रक्षामंत्री ( भारत सरकार ) ने कहा कि : 900 वर्ष से भी पुरानी इस दरगाह पर सभी धर्मों तथा आस्था के लोग नतमस्तक होते हैं उन्होंने कहा कि यह हमारी गंगा जमुनी तहजीब का उत्कृष्ट नमूना है ।

**शहीद बाबा के राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव तथा आपसी प्रेम और भाई चारे को मजबूत बनाने के फतवे को पूरा किया जा सकेगा । दरगाह के आस पास की भूमि सेना के स्वामित्व में थी जिसे हस्तान्तरित कर दरगाह को दे दिया गया ।**

जिस देश के हिन्दू गवर्नर , मुख्यमंत्री और मंत्री ऐसे मनुष्य को जिसके जीवन का ध्येय की अंतिम समय तक उके पूर्वजों को तलवार के बल पर धर्मान्तरित करना रहा हो , **जिसने इस्लाम स्वीकार न करने के कारण सहस्रों हिन्दुओं का वध कर दिया हो ऐसे धर्मान्ध व्यक्ति को राष्ट्रीय एकता , साम्प्रदायिक सद्भाव और भाई चारे का संदेश देने वाला और भारत के ऋषि मुनियों जैसा प्रचारित करते हों , वहाँ साधारण अनपढ़ हिन्दू अपने गवर्नर , मुख्यमंत्री और मंत्री की श्रद्धा देखकर ऐसे क्रूर** व्यक्ति को अपना अपना अपना मुक्तिदाता समझकर उसकी पूजा करने लगे तो **क्या आश्चर्य है ?** आश्चर्य तो यह है कि ये विशिष्ट लोग सूफियों के लिए बार बार शहीद और गाजी शब्द का प्रयोग करते हैं और उसी साँस में उन्हें राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव और आपसी भाई चारे का संदेश देने वाला भी कहते हैं ? क्या वे नही जानते कि इन लोगों के संदर्भ में शहीद का अर्थ क्या है । कहने की आवश्यकता नहीं कि सभी मजारों की तरह इन मजारों पर भी हिन्दुओं की संख्या ही अधिक आती है । इस्लाम में मजार पूजा का निषेध होने के कारण कुछ ही अंधविश्वासी मुसलमान इन पर श्रद्धा सुमन चढ़ाने आते हैं ।

चार वर्ष की आयु से ही सलार मसूद को इस्लाम की शिक्षा दी गयी थी । 50000 घुड़सवारों के साथ उसने सिन्धु नदी पार की । उसकी आयु उस समय 17 वर्ष थी । यह सेना जहाँ भी पहुँची, तबाही मच गयी । महमूद गजनवी के दो आक्रमणों ने मुल्तान को पहले ही वीरान कर दिया था । वहाँ के राजा उछ में जाकर बस गए । उन्होंने मसूद से कहलवाया कि विदेशी भूमि पर इस प्रकार आक्रमण करने का क्या औचित्य है ? मसूद ने उत्तर दिया – " *भूमि तो अल्लाह की है वह अपने जिस दास को देना चाहता है, देता है । " मेरे पूर्वजों का यही विश्वास रहा है कि " काफिरों को मुसलमान बनाना हमारा कर्तव्य है ।* यदि वे हमारा धर्म स्वीकार कर लें तो ठीक, अन्यथा हमें उनका वध कर देना चाहिए । "

इसके पश्चात मसूद ने हिन्दू राजाओं पर आक्रमण किए और असंख्य हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया । बहुत से तुर्क भी मारे गए । वर्षा ऋतु के अन्त तक सुल्तान मुल्तान में ही पड़ा रहा । उसके पश्चात वह अवध की ओर लौट चला । मार्ग में उसने अपना इस्लाम अथवा मृत्यु का अभियान अगली बरसात तक जारी रखा ।

वर्षा ऋतु के बाद वह दिल्ली की ओर लौट चला । राजा महीपाल दिल्ली का शासक था । उसकी विशाल सेना से मसूद भयभीत हुआ । परन्तु उसी समय गजनी से नई सेना उसकी सहायता के लिए आ गयी । इस युद्ध में भी असंख्य हिन्दू मारे गए । बहुत से तुर्क सरदार भी खेत रहे । महाराज महीपाल भी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए । तुर्की सरदार जहाँ मरे वहीं दफन कर दिए गए । और कुछ समय पश्चात वे हत्यारे मूर्ख हिन्दुओं के उपास्य बन गए । अनेक हिन्दू भय और लोभ से मुसलमान हो गए । धर्मान्तरित हिन्दुओं में से 5000 अथवा 6000 लोगों की नयी सेना भर्ती की गयी । इसके बाद मसूद कन्नौज की ओर चल पड़ा । वहाँ के राजा अजय पाल ने , जो महमूद द्वारा परास्त किया गया था उसकी काफी आवभगत की ।

वहाँ मसूद ने गंगा पार की और सतरिख ( सीतापुर जनपद ) की ओर चल पड़ा । सतरिख हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ था । और वहाँ हिन्दुओं की घनी आबादी थी । इसलिए उसने वहाँ डेरा डाला और अपने सरदारों को सेना देकर चारों ओर भेजते समय कहा " हम तुम्हें अल्लाह के सुपुर्द करते हैं । तुम जहाँ जाओ पहले समझा बुझाकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाओ । यदि वे इस्लाम ग्रहण कर लें तो उन पर दया करना अन्यथा उनका वध कर देना । " फिर वह गले मिलकर अपनी अपनी दिशा में चल दिए ।

एक मुस्लिम इतिहासकार लिखता है – " कैसा अद्‌भुत दृश्य है , कैसी अद्‌भुत मित्रता ? कैस अद्‌भुत विश्वास है कि केवल सत्यमत ( इस्लाम ) के प्रसार के लिए बिना किसी लोभ के बिना किसी भय के , इस प्रकार कुफ्र के समुन्दर में कूद पड़ना ?

मीर बख्तियार दक्षिण की ओर चल पड़ा । और कानपुर तक पहुँच गया । वहाँ वह युद्ध में मारा गया । वहाँ उसकी विख्यात मजार है ।

मसूद ने अमीर हसन अरब को महोना पर और मीर सैययद अजीजुद्दीन को को गोपामऊ पर आक्रमण करने के लिए भेजा । मीर सैय्यद अजीजुद्दीन अब लाला पीर के नाम से क्षेत्र में मशहूद है । मलिक फजल को बनारस पर आक्रमण करने के लिए भेजा गया । मसूद सतरिख में ही ठहर गया ।

इस समय कर्रा और मानिकपुर के राजाअें के दूतों ने मसूद को उनके देश से शांतिपूर्वक वापिस जाने के लिए अन्यथा युद्ध के लिए तैयार रहने के लिए दूत भेजे । मसूद ने उत्तर दिया " हम यहाँ मौज मस्ती के लिए नहीं आए है हम यहीं रहेंगे और इस भूमि को कुफ्र और काफिरों से समूल नष्ट कर देगें ।

सलार मसूद के सिपहसलार सैफुद्दीन ने बहराइच ने बहराइच में तुरन्त सहायता माँगी तो मसूद ने उसकी सहायता के लिए सतरिख से बहराइच के लिए प्रस्थान किया ।

बहराइच में हिन्दुओं का एक तीर्थ स्थान सूरज कुण्ड होता था । वहाँ सूर्य देवता की एक प्रतिमा थी और देश भर से हिन्दू, सूर्य ग्रहण के अवसर पर वहाँ पूजा और कुण्ड में स्नान करने के लिए आते थे । मसूद को यह देखकर अपार कष्ट होता था । वह बहुधा कहा करता थाकि वह कुफ्र के इस गढ़ को नष्ट कर देगा ।

किन्तु बहराइच में चारों ओर से हिन्दू राजाओं ने अपनी अपनी सेना केसाथ मसूद को घेर लिया । बार बार युद्ध होता रहा । 15 जून 1933 को सांयकाल के समय, पासी राजा सुहलदेव के एक बाण से मसूद का प्राणान्त हो गया । पूरी मुस्लिम सेना नष्ट हो गयी । मसूद के आदेश से , जितने मुसलमान सैनिक मरते थे, वे सूरज कुण्ड में डाल दिए जाते थे । मसूद का विचार था कि उनकी दुर्गन्ध से हिन्दू अपने तीर्थ को भ्रष्ट समझकर त्याग देंगे । मसूद की मृत्यु के बाद उसे वहाँ दफन कर दिया गया, जहाँ उसकी मृत्यु हुई थी । बाद में इस क्षेत्र में मुस्लिम राज्य हो जाने पर उसे सूरज कुण्ड के पास ही दफना दिया गया । ( इलियट एण्ड डाउसन : हिस्ट्री ऑफ इण्डिया बाई इट्स ओन हिस्टोरियन्स, खंड 2, पृ. 529–547

## शेख जलालुद्दीन तबरीजी

यह सूफी बंगाल में लखनौती में रहता था । वहाँ धीरे धीरे इसने काफी भूमि पर कब्जा कर लिया । इसके बाद वहाँ अपने शि यों को छोड़कर

वह देवतल्ला चला गया । वहाँ किसी काफिर ने एक बड़ा मन्दिर और कुआँ बनवाया था । **इस सूफी ने उस मन्दिर को तोड़कर वहाँ अपनी खानकाह बना ली और वहाँ के हिन्दू और बौद्ध निवासियों का बड़ी संख्या में धर्मान्तरण किया । यह महाशय भी हिन्दुओं की श्रद्धा का पात्र है । उसकी स्मृति में देवतल्ला तबरीजाबाद हो गया है ।**
बंगाल में अपने धर्मान्तरण कार्य के मजबूती से संगठित हो जाने के बाद यह उत्तर प्रदेश में बदायूँ में आकर जम गया और उत्साह से यहाँ भी धर्मान्तरण करता रहा ।
बदांयूनी के अनुसार  शेख दाऊद नामक सूफी पंजाब और सिन्ध में 50 से लेकर 100 तक हिन्दुओं को प्रतिदिन मुसलमान बनाता था । सम्राट अकबर के आदेशों के बावजूद सूफी लोग धड़ल्ले से हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर रहे थे । जौनपुर से लेकर बिहार तक के मुस्लिम बहुल क्षेत्र कादरियों के रशदिया खानकाओं की देन है । दीवान अब्दुर्रशीद के वंशजों और शिष्यों  के  बंगाल में अनेक खानकाहें स्थापित कीं ।  शेख नियामतुल्लाह कादिरी और उसके वंशजों और शिष्यों की सम्राट औरंगजेब और उसके भाई  शाहजादा  शाहशुजा ने बराबर सहायता की जिससे बंगाल के उस भाग का इस्लामीकरण हो गया और अन्ततः इस्लामी बांग्लादेश बन गया ।

### अजमेर के मोइनुद्दीन चिश्ती

भारत के सूफियों में कदाचित इस सूफी की ख्याति सबसे अधिक है । इसको गरीव नवाज गरीबों पर क  पा करने वाला भी कहा जाता है । सम्राट अकबर ने एक पुत्र की लालसा में इस की मजार की कई बार श्रद्धापूर्वक यात्रा की थी । स्वाभाविक है कि तब से इसका ओहदा और भी ऊँचा हो गया । इस सूफी को महान सन्त, धर्मनिरपेक्षता और भारत की सम्मिश्रित गंगा यमुनी संस्क  ति की साक्षात मूर्ति कहा जाता है । धर्मनिरपेक्षता की मिसाल बताया जाता है । छोटे लोगों की तो बात ही

छोड़ दें हमारे प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति भी उसकी मजार पर जाकर चादर चढ़ाने , शीश नवाने और मन्नत माँगने पर गर्व करते हैं । लाखों की संख्या में यात्री जिनमें अधिकांश हिन्दू होते हैं प्रतिवर्ष इसकी मजार का दर्शन करते हैं और लाखों रुपये दान में देते हैं।

**कम लोग ही जानते हैं कि इस व्यक्ति ने भारत के इस्लामीकरणमें कितनी उल्लेखनीय भूमिका निभायी है** और आज अपनी मृत्यु के लगभग 800 वर्ष पश्चात् भी निभा रहा है । पी0 एन0 करीज की पुस्तक द श्राइन एण्ड कल्ट ऑफ मुइनुद्दीन चिश्ती ऑफ अजमेर में इसका विस्तारपूर्वक वर्णन उद्धृत किया गया है ।

जैसे कि कमोबेश प्रत्येक सूफी और मजार के चमत्कारों की कहानियाँ मशहूर हैं मुइनुद्दीन चिश्ती भी अपने चमत्कारों और सिद्धियों के लिए विख्यात है । यह मौहम्मद साहब के वंशज समझे जाते हैं । इन्होंने सूफी मत में दीक्षा उस्मान हरवानी से ली थी जोएक महान सूफी समझे जाते हैं **। सियर अल आकताब नामक पुस्तक के अनुसार उनके भारत में पदार्पण करने से वहाँ इस्लाम की स्थापना हुई । उन्होंने अपने तर्क और विद्वता से भारत में पुरातन काल से चले आ रहे कुफ्र और शिर्क ( हिन्दू धर्म ) के अंधेरे को नष्ट कर दिया । इसलिए इनको नबी अल हिन्द ( हिन्दुस्तान का पैगम्बर ) भी कहा जाता है । सत्तर वर्ष तक वह निरंतर भारत भूमि पर नमाज पढ़ते रहे । जिस पर उनकी दया दृष्टि पड़ी वह तुरंत अल्लाह का सामीप्य पा गया । (अर्थात मुसलमान हो जाता था ) प्रत्येक बार जब वह कुरान का पाठ समाप्त करते थे अदृश्य से एक आवाज आती थी : मुइनुद्दीन तुम्हार पाठ स्वीकार है । य़द्यपि कहा जाता है कि मुइनुद्दीन सोना बनाना जानते थे परन्तु ( इतना तो सत्य है ) कि उनकी पाकशाला मे इतना भोजन बनता था कि नगर के सभी दरिद्र लोग वहाँ भोजन कर लेते थे ।** पाकशाला का नौकर जब उनके पास धन मांगने जाता था तो वह अपनी नमाज की दरी का एक कोना उठा देते थे । वहाँ अपार

धनराशि रोने के रूप में पड़ी रहती थी । वह नौकर से कह देते थे जिताना चाहे उठा कर ले जाए ।
कहा जाता है कि एक बार जब वे पैगम्बर मौहम्मद की मजार की तीर्थ यात्रा पर गए तो एक दिन अंदर से आवाज आई मुइनुद्दीन को भेजो । जब मुइनुद्दीन दरवाजे पर आकर खड़े हुए तो उन्होंने पैगम्बर को बोलते देखा मुइनुद्दीन तुम मेरे मजहब का सार हो । **तुम्हें हिन्दुस्तान जाना है । वहाँ अजमेर है जहाँ मेरा एक वंशज जेहाद करने गया था । और शहीद हो गया और वह स्थान काफिरों के कब्जे में चला गया है । तुम्हारे चरण वहाँ पड़ने से एक बार फिर इस्लाम वहाँ अपनी प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और काफिर हिन्दू अल्लाह के क्रोध के भाजन बनेंगे ।**
चुनाचे मुइनुद्दीन अजमेर पहुँचे । वहाँ पहुँचकर उन्होंने कहा अल्लाह का यश बढ़े क्योंकि मैने अपने भ्राता की सम्पत्ति पर फिर अधिकार पा लिया है । यद्यपि उस समय वहाँ की झील के चारों ओर बहुत से मूर्ति मन्दिर थे , ख्वाजा ने कहा **यदि अल्लाह और पैगम्बर ने चाहा तो मुझे इन मूर्ति मन्दिरों को ध्वस्त करने में देर नहीं लगेगी ।**
सियर अल अकताब फिर वर्णन करता है कि ख्वाजा ने किस प्रकार चमत्कारिक तरीकों से उन हिन्दू गुरुओं ( ब्राह्मणों ) और हिन्दू देवी देवताओं पर विजय प्राप्त की जो उनके वहाँ रहने का घोर विरोध कर रहे थे ।
इन कहानियों में से एक के अनुसार उस समय के दिल्ली सम्राट् राय पिथौरा ( पृथ्वी राज चौहान ) का कोई विश्वासघाती सेवक जो अपने स्वामी से किन्हीं कारणों से द्वेष रखता था ख्वाजा की शरण आया। ख्वाजा ने राय पिथौरा के पास इस व्यक्ति की सिफारिश भेजी जो राय पिथौरा ने अस्वीकार कर दी । ख्वाजा ने इस पर क्रुद्ध होकर श्राप दिया : हमने राय पिथैरा को जीवित इस्लामी सेनाओं के हाथें में दे दिया है ।
इन कहानियों के चमत्कारिक भाग को छोड़ दें तो वास्तविकता यह लगती है कि अजमेर में कोई सूफी वहाँ के हिन्दुओं का धर्मान्तरण करने आया था

जिसे वहाँ के हिन्दुओं ने क्रोधित होकर मार डाला । ख्वाजा जब हज करने गए तो वहाँ यह बात बताई गयी । उस धर्मान्तरण कार्य करने पर फिर वहाँ के धर्मनिष्ठ ब्राह्मणों इत्यादि ने उनका विरोध किया किन्तु अपने अथाह धन के बल पर जो कदाचित मुसलमान शासकों द्वारा उनको मिलता था उन्होंने स्थानीय अंधविश्वासी लोगों में अपनी चमत्कारिक शक्तियों का प्रदर्शन कर ( जो अनेक साधु और फकीर हाथ की सफाई से आज भी कर दिखाते हैं ) कुछ को मुसलमान बना लिया । इनमं कुछ ऐसे प्रभावशाली लोग भी थे जो किन्हीं कारणों से अपने स्वामी दिल्ली नरेश पृथ्वीराज चौहान से रुष्ट थे और विश्वासघात के लिए तैयार हो गए । इस स्थिति के उत्पन्न हो जाने के कारण ख्वाजा ने राय पिथौरा से सीधे सीधे अनेक आग्रह करने प्रारम्भ कर दिए । जो तिरस्कार पूर्वक नामंजूर कर दिए गए । ख्वाजा गजनी गए और तत्कालीन सुल्तान शिहाबुद्दीन गौरी को परिस्थितियाँ अनुकूल बताकर भारत पर आक्रमण के लिए आमंत्रित किया ।

शिहाबुद्दीन ने भारत पर अनेक आक्रमण किए । परन्तु हर बार पृथ्वीराज ने उसे परास्त कर उसके क्षमा माँगने पर अपनी उदारतावश उसे स–सैन्य वापिस जाने दिया । किन्तु प थ्वी राज का शत्रु तो घर में ही बैठा रहा । दूसरे शत्रु भी बढ़ गए । फलस्वरूप पृथ्वीराज चौराज शिहाबुद्दीन के हाथों बन्दी बना लिए गए ।

यथार्थवादी शिहाबुद्दीन ने एक बार भी वह मूर्खता नहीं दिखाई जो पृथ्वीराज दिखाते रहे थे । हाथ में आते ही उसने पृथ्वीराज का वध कर दिया ।

सियार इल अकताब से मालूम होता है कि इस घटना से पहले ही ख्वाजा मुइनुद्दीन अजमेर के प्रसिद्ध जोगी अजयपाल को मुसलमान बनाने में सफल हो गया था । इसके पश्चात् उसने अपना डेरा जोगी के विशाल मंदिर में ही जमा लिया । मुइनुद्दीन की दरगाह पर बने बुलन्द दरवाजों में नक्काशी किए जो पत्थर लगे हैं उनको देखने से लगता है कि वे

पहले मंदिर के निर्माण में प्रयोग किए गए थे । ऐसे कट्टर हिन्दुओं और हिन्दू धर्म के  त्रु ने किस प्रकार वास्तविक ध्येय को छिपाकर अपनी धर्मनिरपेक्षता का भ्रम अन्धविश्वासी हिन्दुओं में उत्पन्न किया होगा इसका नमूना आज भी प्रत्यक्ष है । एक ब्राह्मण परिवार चन्दन घिस कर वह लेप दरगाह में भेजता है जो ख्वाजा की मजार पर चढ़ाया जाता है । मुसलमानों में चंदन के लेप का प्रयोग किसी  धार्मिक कृत्य में नहीं किया जाता । यह चन्दन का लेप वहाँपर अजयपाल जोगी के ईष्ट देवता की मूर्ति के लिए भेजा जाता रहा होगा ।
सियार इल आरिफीन इस महान संत के जीवन कार्य का इस प्रकार जायजा लेती हैं ।
उस ( मुइनुद्दीन चिश्ती ) के हिन्दुस्थान आने पर उस देश में इस्लाम का मार्ग प्रशस्त हो  गया । उसने ( इस्लाम के प्रति ) अविश्वास के अंधेरे को नष्ट कर दिया और इस्लाम का प्रकाश चारों ओर फैला  अमीर  खुर्द की दो चौपाइयों में ख्वाजा मे आगमन से पहले और पश्चात के हिन्दुस्थान का इस प्रकार वर्णन है ।
सम्पूर्ण भारत ( इस्लाम ) मजहब और (शरीयत )कानून से अनभिज्ञ था । किसी को अल्लाह और पैगम्बर का पता नहीं था । किसी ने काबा के दर्शन नहीं किए थे । किसी को अल्लाह की महानता का ज्ञान नहीं था । और ख्वाजा के आने के बाद उसकी तलवार के कारण इस कुफ्र की भूमि में मूर्तियों और मंदिरों के स्थान पर मस्जिद मिम्बर और मेहराब बन गए । जिस भूमि पर मूर्तियों गुणगाान होता था अब नारये तकवीर ( अल्लाहो अकबर ) सुनाई देती है । सचमुच भारत के इस्लामीकरण में मुइनुद्दीन चिश्ती का महत्त्व मौहम्मद बिन कासिम , महमूद गजनवी , शिहाबुद्दीन गौरी , खिजली , तुगलक , बाबर , औरंगजेब इत्यादि सुल्तानों से कम नहीं है और यही उसकी महानता है ।

## बंगाल का इस्लामीकरण

काश्मीर की भाँति बंगाल के इस्लामीकरण में भी सूफियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

400 ई0 में बंगाल में राजा गणेश सिंहासनारूढ़ थे । इस हिन्दू राज्य में मुस्लिम उलेमा और सूफी ( हिन्दुओं के धर्मान्तरण और इस्लाम के प्रचार द्वारा ) अनेक समस्याएं उत्पन्न कर रहे थे । राजा गणेश को इन सूफियों की राजनीतिक शक्ति का कोई आभास नहीं था । उसने इन लोगों का दमन करने की ठानी ।

कुतबुल आलम शेख नूरुल हम नामी सूफी ने सुल्तान इब्राहीम शरकी को पत्र लिखा कि वह आकर बंगाल के मुसलमानों की रक्षा करे । स्पष्ट है कि सूफियों ने वहाँ सुल्तान के पक्ष में काफी कुछ तैयारिँया कर ली होंगी । सुल्तान इब्राहीम ने इस पत्र की प्राप्ति पर बंगाल के विरुद्ध युद्ध की शुरुवात कर दी । राजा गणेश ने इस अनपेक्षित युद्ध में अपनी स्थिति कमजोर समझ कर उसी शेख नूरुल हक से जिससे वह पीछा छुड़ाना चाहता था सहायता की अपील की । शेख ने कहा कि वह उसकी सहायता तभी कर सकता है जब राजा इस्लाम स्वीकार कर ले । राजा तो तैयार हो गया परन्तु रानी के विरोध के कारण समझौता इस बात पर हुआ कि राजा सिंहासन अपने पुत्र जदु को सौंप दे और पुत्र इस्लाम स्वीार कर ले । तद्नुसार जदु ( जलालुद्दीन मौहम्मद बनकर ) सिंहासन पर बैठा । सुल्तान इब्राहीम ने अपनी सेनाएं वापिस बुला लीं । **इस घटना से ही सूफियों की शक्ति और भारत के इस्लामीकरण के कार्य में तत्कालीन मुस्लिम सुल्तानों से उनके तालमेल का ज्ञान हो जाता है ।**

जलालुद्दीन मौहम्मद को तो शेखों और सूफियों के हाथ की कठपुतली की तरह रहना ही था । **उसने 1414 – 1431** के अपने 17 वर्ष के शासन में अपनी हिन्दू प्रजा का बड़े पैमाने पर बलात् धर्म परिवर्तन किया और बंगाल को मुसलमान बनाने में अपनी पूरी राज्य शक्ति लगा दी ।

जो राजा इस्लाम ग्रहण कर लेते थे वे दूसरे हिन्दुओं के धर्मान्तरण मे बहुत रुचि लेते थे । इसका कारण यह था कि हिन्दू प्रजा धर्मान्तरित राजा को घ णा की दृष्टि से देखती थी ं राजा को विद्रोह और भाड्यन्त्र का सदैव भय बना रहा था । प्रजा में जो लोग मुसलमान हो जाते थे मुस्लिम शासक के पक्ष में हो जाते थे । बंगाल के इस्लामीकरण में इस प्रकार के धर्मान्तरित राजाओं का बड़ा योगदान है । सुल्तान जलालुद्दीन ( जदु ) , काला पहाड़ , मुर्शिद अली खाँ , पीर अली और मौहम्मद मुसलमान होने से पहले ब्राह्मण थे । इसी प्रकार परसेनी के मुस्लिम राजा , राजा पुदित सिंह के वंशज हैं चटगाँव के असद खाँ , श्याम राय चौधरी के वंशज हैं । तिप्परा के परगना सरायन , मेमन सिंह , हैबतत नगरी और जंगम बाड़ी के दीवान परिवारों और दरभंगा के मफौली के पठान परिवारों के पूर्वज हिन्दू थे । इन लोगों ने भयानक रूप से हिन्दुओं का धर्मान्तरण किया । **डॉ0 वाइज ने जलालुद्दीन सुल्तान के विषय में लिखा है । एक ही शर्त थी कुरान मृत्यु । बहुत से हिन्दू कामरूप और असम के जंगलों में भाग गए ।**

उस समय इस्लाम से बचने का यही एक मार्ग था , घर बार छोड़कर घने जंगलों में रहने लगना । किन्तु क्या वे सदैव भय मुक्त हो जाते थे ? मुसलमान सुल्तान जुगलों में उनका पीछा नहीं छोड़ते थं जिस प्रकार जंगली पशुओं के शिकार में हाँका जाता है उसी प्रकार जंगल में एक भाग पर सैनिक चारों ओर से घेरा डाल देते थे । फिर वह घेरा धीरे धीरे छोटा होता जाता था । **उसमें जो भी स्त्री , पुरुष बच्चे पकड़े जाते थे व गुलाम बना लिए जाते थे ।** यदि विदेश में बेचने के लिए न भेजे गए तो अपने ही देश मे निम्न कोटि भंगी इत्यादि का काम करने को मजबूर किए जाते थें इस्लाम ग्रहण तो उनकों करना ही पड़ता था । इस प्रथा को कमरघा कहा जाता था ।

डा0 वाइज आगे लिखते हैं यह सम्भव है कि इस जलालुद्दीन सुल्तान ने अपने चौदह वर्ष के शासन काल में जितने बंगाली हिन्दुओं को

मुसलमान बना दिया उतने अगले 300 वर्ष में भी नहीं बने । बारबोस लिखता है कि 16 वीं शताब्दी मे बंगाल में मुसलमान होना इतनस लाभदायक था कि शासकों के कृपा पात्र बनने के लिए ब ड़ी संख्या में हिन्दू प्रतिदिन मुसलमान हो रहे थे ।

स्पष्ट है कि यदि गणेश जैसा दृढ़ प्रतिज्ञ हिन्दू राजा सूफियों को सामना करने में असमर्थ रहा तो छोटे छोटे राजा और जमींदार उनकी कारगुजारियों को कैसे रोक सकते थे । फलस्वरूप भारत वर्ष एक विशाल शिकारगाह बन गया था । पहाँ शासक हथियार लेकर और सूफी उनकी सहायता के लिए धार्मिक आवरण में चमत्कारों के नाम पर संगठित होकर हिन्दुओं का शिकार करने को उतर पड़े थे ।

छोटे छोटे राजा जमींदार और किसान यदि सुल्तान को खिराज ( टैक्स ) अथवा जिजिया देने में असमर्थ होते थे तो उन्हें सपरिवार मुसलमान हो जाना पड़ता था । यह प्रथा बंगाल में ही नहीं पूरे भारत मे प्रचलित थी क्योंकि गुजरात से बंगाल तक उसके अनेक उदाहरण मिलते हैं ।

मुस्लिम सुल्तानों और बादशाहों के यहाँ गुलामों के अतिरिक्त हिजड़ों की भी बहुत माँग थी उनका शाही हरम में भिन्न भिन्न पदों पर कार्य करने के लिए उपयोग किया जाता था । स्वयं सुल्तान की सुरक्ष्ज्ञझ के लिए हिजड़ों की एक सेना तैयार की जाती थी । बहुत कम उम्र के बच्चों को बधिया कर दिया जाता था । धीरे धीरे उन्हें अपने परिवार जन भूल जाते थें फिर उनको सैनिक शिक्षा दी जाती थी । घुड़सवारी सिखाई जाती थी और उनका मुख्य कर्त्तव्य सुल्तान की रक्षा करना होता था । इस प्रकार दासों और हिजड़ो को बंगाल से सहस्रों की संख्या में प्रतिवर्ष निर्यात किया जाता था । सहस्रों दास भी यहाँ से भेजे जाते थे ।

प्रचलित विश्वास के विपरीत कि ये सूफी हिन्दुओं के प्रति दयालु होते थे ये भी सुल्तानों की तरह उन हिन्दुओं प्रति जो धर्म परिवर्तन को तैयार नहीं होते थें अति क्रूर होते थे । केवल एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा ।

शेख अब्दुल कद्दुस गंगोही (सहारनपुर उ.प्र. ) चिश्तिया सिलसिले का सूफी था यह सिलसिला दूसरे सिलसिलों की अपेक्षा अधिक उदार समझा जाता है । इस सूफीने सुल्तान सिकन्दर लोदी , बाबर और हुमायूँ को अनेक पत्र लिखे । उसका आग्रह था कि शरियत को सख्ती से लागू किया जाए औरहिन्दुओं को भूमि टैक्स और अपमानजनक जिजिया टैक्स देने पर मजबूर कर दिया जाए । **बाबर को लिखे गए पत्र में उसने आग्रह किया : उलेमा और सूफियों को अधिक से अधिक संरक्षण और सहायता दी जाए । शरियत नियमों के** अनुसार उन पर सब प्रकार के अपमान और तिरस्कार लादे जाएं । वास्तव मं मुस्लिम काल में हिन्दुओं को इस्लाम में लाने के लिए जो अत्याचार और अन्यायपूर्ण तरीके अपनाए गए उनकी फेहरिस्त अंतहीन है ।
16 वीं और 18 वीं शताब्दी के बीच मुस्लिम शासकों और सूफियों के संगठित प्रयास द्वारा हिन्दुओं का बड़े पैमाने धर्मान्तरण किया गया । सूफी लोग इस कार्य से संबधित फारस, ईराक और मध्य ऐशिया का अपना अनुभव साथ लेकर आए थे ।
भारतवर्ष में आज भी इन मृत और जीवित सूफियों द्वारा अनेक धर्म परिवर्तन हो रहे हैं ।

## काश्मीर का इस्लामीकरण

दैनिक समाचार पत्रों में काश्मीर में चरार ए शरीफ नामक नन्द ऋषि नूरुद्दीन की दरगाह को आतंकवादियों द्वारा जला दिए जाने पर अनेक समाचार और लेख छपे , 10 – 11 मई 1995 की रात कश्मीर में चरार ए शरीफ दरगाह जल कर खाक हो गयी । भारतीय प्रेस ने अपनी आदत के अनुसार उसे सूफी संत नुरुद्दीन नूरानी की पवित्र दरगाह ( इण्डिया टुडे ) सिम्बल ऑफ सैक्यूलरिज्म , ऐ मोस्ट वैल्युएबिल सिम्बल ऑफ कल्चरल आइडैन्टिटी ( फ्रन्ट लाइन ) , एबोड ऑफ रिशीज ( इकोनॉमिक टाइम्स )

इत्यादि न जाने क्या क्या कह कर गौरव मण्डित किया । और अपनी घोर अनभिज्ञता लज्जाजनक प्रदर्शन भी ।
**चरार ऐ शरीफ गए सर्वदलीय संसदीय प्रतिनिधि मण्डल की तरफ से जारी एक विज्ञप्ति मे कम्युन्स्टि नेता इन्द्रजीत गुप्ता ने वहाँ पहुँचकर इस महान सूफी संत को अपनी श्रद्धांजली अर्पित की जो साम्प्रदायिक एकता के प्रतीक रहे थे । ( नवजीवन लखनउ )** हे भगवान ! कैसी घोर अनभिज्ञता ! और वह भी देश के गौरव के प्रतीक संसद के सदस्यों में !

कुछ ही लोगों को कदाचित् यह ज्ञात होगा कि यह नुरुद्दीन कौन था ? यह कौन सी गंगा जमुनी , धर्म निरपेक्ष , सांस्कृतिक परम्परा की पहचान था । बीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक में काश्मीर में फैले रक्तरंजित आतंकवाद में इन तथा कथित संत ऋषि और उनके अन्य सहयोगी सूफी सन्तों की क्या महत्तवपूर्ण भूमिका रही है ? बात अजीब सी लगती है **परन्तु सत्य यह है कि यदि इन तथाकथित मुस्लिम संतों , ऋषियों , सूफियों का कश्मर में पदार्पण न हुआ होता अथवा वहाँ के शासकों ने इन्हें संत और ऋषि समझ कर आश्रय न दिया होता तो आज कश्मीर विश्व का सर्वश्रेष्ठ पंथनिरपेक्ष शान्तिप्रिय देश हुआ होता । पृथ्वी पर साक्षात स्वर्ग ।**

कश्मीर के इस्लामीकरण मे एक ओर सिकन्दर बुत शिकन जैसे खूंखार सुल्तानों की भूमिका है वहीं दूसरी ओर सूफियों का जमघट है । जिन्होंने विविध प्रकार से सन्तों , योगियों महात्माओं के छद्म रूप में अपने शिष्यों और अनुयायियों का धर्म परिवर्तन कर ब्राह्मण कश्मीर को मुस्लिम कश्मीर बना दिया । सिकंदर बुतशिकन के ( 1389 – 1431 ) विषय में राजतरंगिणी बताती है सुल्तान अपने तमाम राजसी कर्त्तव्यों को भुलाकर दिन रात मूर्त्तियाँ तोड़ने का आन्नन्द उठाता रहता था । उसने मार्तण्ड , विष्णु , ईशान चक्रवर्ती और त्रिपुरेश्वर की मूर्तियाँ तोड़ डाली थीं । कोई भी वन , ग्राम , नगर अथवा महानगर ऐसा न था जहाँ तुरुष्क और उसके मंत्री सुहा ने देव मंदिर तोड़ने से छोड़ दिए हों ।

हिन्दुओं के लिए एक ही विकल्प था : इस्लाम अथवा मृत्यु । कुछ कश्मीरी ब्राह्मणों ने पहाड़ से कूद कर , आग में जल कर अथवा दूसरी प्रकार आत्महत्या कर ली । कुछ किसी प्रकार शासन द्वारा डाले गए घेरे को चकमा देकर देश से भागने में सफल हो गए । अधिकांश ने इस्लाम स्वीकार कर लिया । बहुत से तकियों अर्थात् दरगाहों में रहने लगे जिसका अर्थ था कि वे भोजन के लालच में मुसलमान हो गए । कहा जाता है कि सिकन्दर बुत शिकन के अत्याचारों के फलस्वरूप कश्मीर में कुल 11 ब्राह्मण परिवार शेष रह गए । उसके समकालीन जम्मू के हिन्दू राजा को तैमूर ने धौंस और भय द्वारा मुसलमान बना लिया ।
किन्तु हिन्दुओं के अस्तितत्व को मिटाने के लिए सूफी लोग सिकन्दर बुत शिकन से कहीं अधिक प्रभावशाली और खतरनाक थे । सिकन्दर बुत शिकन के अत्याचार द्रष्टव्य थे । व सूफी मीठे विष थे जिनकों हिन्दू स्वयंमेव अमृत समझ कर पीते थे । उन अत्याचारों के भय से उच्च्व और मध्यम वर्ग के हिन्दू मुसलमान बनते थे । निम्न वर्ग के हिन्दू जिजिया और दूसरे आर्थिक दबाव तथा लोभ के कारण । परन्तु फल वही होता था जो सिकन्दर बुत शिकन को इष्ट था इसलाम में धर्मान्तरण । सिकन्दर बुत शिकन के डर से लोग भागते थे । पहाड़ से कूद कर आत्महत्या कर लेते थे कि कहीं वह उनका धर्म नष्ट न कर दे । सूफियों की ओर वे उसी प्रकार खिंचे चले जाते थे और खुशी से इस्लाम न में प्रविष्ट हो जाते थे , जो विद्रोह करते थें वे नष्ट कर दिए जाते थें ।

**ब्राह्मण बाहुल्य कश्मीर के इस्लामीकरण में जिन सूफियों का विशेष योगदान रहा उनमें एक शीर्षस्थ सूफी यही शेखनूरुद्दीन था जिसकी दरगाह चरार ऐ शरीफ मुस्लिम आतंकवादियों द्वारा जलाए जाने पर चर्चा का विषय बन गयी । इसका जन्म 9 अप्रैल 1370 ई0 को हुआ बताया जाता है ।**

शेख नूरुद्दीन की सूफी मत में दीक्षा सययद अली हमदानी ने दी अथवा उसके किसी खलीफा ने इस पर कुछ मतभेद हैं । किन्तु इसमें सन्देह

नहीं कि वह सययद अली हमदानी की परम्परा में ही पला । इसलिए शेख नूरुद्दीन के व्यक्तितत्त्व का वास्तविक परिचय पाने के लिए उसके पीर सययद हमदानी के चरित्र को जानना आवश्यक है ।

1089 में महाराज हर्ष के राज्य काल से ही अनेक किराए के मुस्लिम सैनिक और मुस्लिम व्यापार कश्मीर में आकर बसने लगे थे । इसी प्रकार के सैनिकों में एक शाह मीर था जो 1313 ई0 में वहाँ पहुँचा , 1320 ई0 के लगभग मंगोल सरदार जुलकद्र खाँने कश्मीर पर आक्रमण कर वहाँ बड़ी तबाही मचायी । लुटे पिटे कश्मीर पर लद्दाख के एक बौद्ध रिनछाना ने वहाँ के हिन्दू राजा को हटाकर अपनी सत्ता स्थापित कर ली । किन्तु कश्मीर की ब्राह्मण प्रजा उसके बौद्ध होने के कारण लगातार विद्रोहरत रहती थी । शाहमीर के समझाने पर इस स्थिति से निपटने के लिए बौद्ध रिनछाना ने इस्लाम स्वीकार कर लिया । रिनछाना ने शाहमीर को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया । मध्य एशिया और ईरान मुस्लिम हो चुका था । रिनछाना का धर्मपरिवर्तन करने वाले सूफी का नाम था सययद शफुद्दीन सुहरावर्दी जो तुर्किस्तान के शेख शिहाबुद्दीन का शिष्य था । रिनछाना का मुस्लिम नाम था सदरुद्दीन । शेख को कश्मीर में बुलबुल शाह के नाम से जाना जाता है । रिनछाना ने धर्म परिवर्तन के बाद इन सूफियों को काफी जमीनें दीं , जिन पर उन्होंने खानकाह स्थापित किए और हिन्दुओं के धर्म परिवर्तन को नई शक्ति मिली ।

काफी राजनीतिक उथल पुथल के बाद शाहमीर 1339 ई में कश्मीर की गद्दी पर बैठा । गद्दी प्राप्त करने के लिए ब्राह्मणों का सहयोग आवश्यक था । **उस सहयोग को प्राप्त करने के लिए उसने अपनी पुत्रियाँ ब्राह्मण सरदारों को ब्याह दीं । उससे ब्राह्मणों का विरोध भी समाप्त हो गया और अन्ततः वे भी मुसलमान हो गए , क्योंकि मुसलमान लड़कियों से विवाह करने वाले लोग पारम्परिक हिन्दू समाज में नहीं रह सकते थे ।**

1420 – 70 में भी कश्मीर के सययद मख्दूम जहांनियाँ के शिष्यों द्वारा सुहरावर्दी सूफियों को बहुत बढ़ावा मिला । इसी समय में किरमान का सययद अहमद कश्मीर में आकर बसा । मख्दूम जहांनियाँ की परम्परा के एक सूफी सययद जमालुद्दीन ने कश्मीर में आकर धर्मान्तरण किए । वह केवल 6 महीने कश्मीर में रही और फिर अपने योग्य शिष्य शेख हमजा पर कार्य भार छोड़कर दिल्ली चला गया ।

**किन्तु चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम दिनों में कश्मीर में मीर सययद अली हमदानी** ( नंद ऋषि नूरुद्दीन के गुरु ) ने जो परम्परा कश्मीर में डाली उसने कश्मीर का नक्शा ही बदल दिया । भारत मे आने से पहले इन्होंने अपने एक अनुयायी सययद ताजुद्दीन को कश्मीर भेजा । सययद ताजुद्दीन को कश्मीर के समय उस समय के सुल्तान शिहाबुद्दीन ( 1345 – 73 ) द्वारा खानकाह बनाने के लिए भूमि और धन इत्यादि अनेक सुविधाएं दी गयी । **श्री नगर के उत्तर पश्चिम दिशा में वहाँ से 9 मील के फासले पर शिहाबुद्दीन पुरा में इस खानकाह की नींव पड़ी ।**

अपने शिष्य से कश्मीर की राजनीतिक और धार्मिक स्थिति की रिपोर्ट प्राप्त होने पर सययद अली हमदानी भी अपने 700 शिष्यों के साथ 1381 ई0 में कश्मीर में आकर बस गए । उस समय सुल्तान कुतुबुद्दीन का शासन था ।

सययद अली हमदानी , अलाउद्दौला के सिमनानी उत्साह से जो उसके पीर शेख शरफुद्दीन के पीर थे , भयानक रूप से प्रभावित था । उसके और उसके शिष्यों के इस असीम उत्साह की परिणति मंदिर ध्वस्त करने और कश्मीरी हिन्दुओं का बलात् धर्म परिवर्तन करने में हुई ।

कश्मीर पहुँचने पर सैयद अली हमदानी ने श्रीनगर के काली मन्दिर के ब्राह्मण पुजारी का पहला धर्मान्तरण किया । हमदानी की प्रेरणा से सुल्तान द्वारा काली मन्दिर को तोड़कर वहाँ हमदानी का खानकाह स्थापित किया गया । हमदानी ने कश्मीर का विस्तृत दौरा किया और लगभग बीस ईरानी सूफियों को जिन्हें वह अपने साथ लाया था विभिन्न स्थानों पर

स्थापित किया । इन सभी ने इन स्थानों पर खानकाह ओर लंगर ( मुफ्त भोजनालय ) बनाए जिन्हें मुस्लिम शासन ने सब प्रकार की सहायता दी । हमदानी के अनेक कश्मीरी शिष्यों ने अपनी अपनी खानकाहें बनाईं और पूरे कश्मीर को धर्मान्तरण केन्द्रों से पाट दिया । ये सूफी लोग जहाँ अपने चमत्कार ( बाजीगरी ) से अंधविश्वासी भोले भाले हिन्दू और बौद्ध कश्मीरियों का धर्माण्तरण करते थे , वहीं शासन की छिपी अथवा खुली सहायता द्वारा मन्दिरों को ध्वस्त कर उन पर खानकाह और मस्जिदें निर्माण करना उनका मुख्य कार्य था और इस कार्य में वह अत्यन्त रुचि लेते थे ।

हमदानी तीन वर्ष कश्मीर में रहा । उसके बाद हज के लिए जाते हुए मार्ग में उसकी मृत्यु हो गयी । मध्य एशिया में उसको दफन कर दिया गया । **इन्हीं सययद अली हमदानी की परम्परा में शेखनूरुद्दीन ( ऋषि नन्द ) पला और बड़ा हुआ ।** जिस समय शेख नूरुद्दीन कश्मीर के इस्लामीकरण की सोच रहे थे उस समय कश्मीर में एक शिव उपासक योगिनी लाला दीदी का बहुत नाम था । उसे लोग प्यार से लाला देद कहते थे । लाल देद की कविताएं घर घर में गायी जाती थी । कश्मीरी जनता में उनका अपूर्व सम्मान था ।

हमदानी के तीन वर्षीय मन्दिर ध्वस्त करो अभ्यिान से कश्मीरी ब्राह्मण बहुल समाज में सूफियों के प्रति रोष व्याप्त हो गया था । शेख नूरुद्दीन ने कश्मीर के इस्लामीकरण का दूसरा मार्ग पकड़ा । उसने लाल देद की सार्वजनिक प्रतिष्ठा और जनता द्वारा अपूर्व प्रम को देखकर उसकी परम्परा में इस्लाम के धर्मान्तरण प्रोग्राम पर हिन्दू दर्शन का रंग चढ़ाकर प्रचार प्रारम्भ किया । शीघ्र ही लाला देवी के भक्त उसको भी उसी आदर की दृष्टि से देखने लगे । फिर प्रारम्भ हुआ **वही धर्मान्तरण का सिलसिला जो प्रत्येक सूफी का वास्तविक प्रिय और एक मात्र ध्येय होता है ।** उन्होंने अनेक हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर उन्हें शिष्य बनाकर अपने दूसरे सहधर्मियों के साथ धर्मान्तरण में लगा दिया । उसके मुख्य शिष्यों में

बामुद्दीन , जैनुद्दीन , लतीफुद्दीन का नाम आता है । ये सभी जन्म से ब्राह्मण थे ।
ध्यान देने योग्य बात यह है कि **किसी भी हिन्दू सन्त ने चाहे वह गुरु नानक हों या लाल देवी अपने किसी भी मुस्लिम भक्त का धर्मान्तरण नहीं किया परन्तु इन तथा कथित धर्म निरपेक्ष महान सूफी सन्तों ने अपनें हिन्दू भक्तों का सदैव ही इस्लाम में धर्मान्तरण किया ।**
इन्द्रजीत गुप्ता जैसे भारतीय कम्युनिस्टों को तो सोवियत संघ जैसे शक्तिशाली राष्ट्र को छिन्न भिन्न करने में सूफियों की भूमिका का ज्ञान होना चाहिए । जब कम्युनिस्ट दमन के कारण रूस के मुसलमानों ने सत्ता के सम्मुख समर्पण कर दिया , काकेशस के आस पास मुस्लिम बहुल राज्यों में विभिन्न परम्पराओं के सूफियों ने संगठित होकर वहाँ प्रकटतः उसी प्रकार का , देखने में अराजनीतिक धार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ किया जैसा कि कश्मीर के सन्दर्भ में हम ऊपर बता आए हैं ।
अलैक्जैन्डर बेनिंगसेन , जो सोवियत इस्लाम के विशेषज्ञ माने जाते हैं , कहते हैं कि इस प्रकार के संगठन और आन्दोलन उस समय के लिए उपयुक्त होते हैं जब इस्लाम काफिरों के विरुद्ध एक नया युद्ध लड़ने के लिए अपनी शक्ति संगठित कर रहा होता है । सूफियों ने इस्लाम के अतिरूढ़िवादी जिहादी रूप को बढ़ावा दिया । अन्ततः मुसलमानों में मजहबी जुनून उत्पन्न कर कम्युनिस्टों का सफाया करने में सफल हो गए । ( प्रा0 डैनियल पाइप्स : इन द पाथ ऑफ गॉड ) नूरुद्दीन के शिष्यों ने अपने को धर्मनिरपेक्ष संत के रूप में पेश करने के लिए सूफी के स्थान पर अपने को ऋषि कहना पारम्भ किया क्योंकि साधारण हिन्दू जनता ऋषि मुनियों को साधारण महात्माओं और योगियों से भी श्रेष्ठ समझती है । पुराने ऋषि मुनियों के बारे में कहा जाता है कि वे बाघ की धारी दार खाल ( बाघाम्बर ) ही ओढ़ते बिछाते थे । इन नकली ऋषियों ने भी काली सेफेद धारियों के ऊनी कपड़े पहनना शुरू कर दिया । **अपने असली ध्येय को छिपाने के लिए इन्होंने घाटी में फलों के पेड़ लगाने**

**जैसा लोकहित कार्य भी किया जैया ईसाई मिशनरी अस्पताल चला कर करते हैं ।** हिन्दू ब्रह्मचारियों की परम्परा में ये लोग मांस नहीं खाते थे तथा शादी नहीं करते थे । इसप्रकार हिन्दुओं पर अपनी आध्यात्मिक धाक जमाए रखते थे । इनके हिन्दू अनुयायी इस्लाम ग्रहण करते तो तुरन्त उन्हें दूसरे हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के कार्य में लगा दिया जाता था । वे अपने खानकाह स्थापित कर लेते थे । इनकी उपयोगिता को देखते हुए मुस्लिम मिशनरी गिरी पड़ी खस्ता कब्रों को पक्का स्वरूप देकर उसे पीर, गाजी अथवा शहीद फलाँ फलाँ की मजार मशहूर कर देते हैं । उनकी चमत्कारी शक्तियों का प्रचार होने लगता है। अज्ञानी और अन्धविश्वासी हिन्दुओं की भीड़ मन्नत मांगने के लिए उमड़ने लगती है । अन्धविश्वास के कारण महिलाओं के यौन शोषण की कहानियाँ भी यदा कदा समचार पत्रों में छपती रहती हैं । **स्वतंत्रता के पश्चात इस प्रकार की सहस्रों नई मजारों पर मेले लगने लगते हैं ।**

# धर्मान्तरण, धर्मान्तरण, धर्मान्तरण

**सययद आदम बन्नौरी ( 1543 ई0 ) के ,ससपकसह में 1000 व्यक्ति हर समय ठहरे रहते थे ।** तजकरे आदमियाँ के अनुसार वह जहाँ भी जाते थे उनके साथ उलेमा और दूसरे लोगों की भीड़ भी जाती थी , 1642 ई0 में जब वह लाहौर आए उनके साथ 10000 लोग थे । उनकी लोकप्रियता देखकर शाहजहाँ भी भयभीत हो गया । उसने बड़ी धनराशि देकरउन्हें भारत से बाहर हज्ज के लिए भेज दिया और इस प्रकार उस शेख से पीछा छुड़ाया ।

तजकरे आदमियाँ और दूसरे सूफी ग्रन्थों में सूफियों के पास अनन्त धनराशि का स्पष्टीकरण करने के लिए उनकी चमत्कारिक शक्तियों का वर्णन किया गया है । उनका इतना राजनीतिक प्रभाव था कि दिल्ली के सम्राट भी उनसे भय खाने लगते थे । अविश्वसनीस चमत्कारी ढकोसलों को दृष्टि से दूर रख कर हम यह सोचने को मजबूर हाते है। कि यह धन आता कहाँ से था ? धन से सभी वस्तुएं प्राप्त हो जाती हैः शिष्य , लोकप्रियता , हथियार , सेना इत्यादि और राजनीतिक प्रभाव । इस दृष्टि से देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि आज की भाँति ही यह धन लेने वाले चाहे सूफी हों या दूसरे लोग सभी दिल्ली के सम्राट के संदेह के दायरे में आते थे क्योंकि कुछ सीमान्त मुस्लिम देश भी मुगल साम्राज्य के सीमान्त प्रान्तों पर सदैव गिद्ध की दृष्टि लगाए रहते थे ।

**शाहजहाँ स्वयं हिन्दुओं के धर्मान्तरण में बहुत रुचि लेता था ।** फिर शाहजहाँ का शेख की धर्मान्तरण गतिविधि और ख्याति से डरने का उपर्युक्त कारण ही हो सकता है । इस्लाम का प्रसार तो ठीक था , परन्तु सीमान्त शत्रु देशों से धन का प्रवेश वांछनीय नहीं था ।

**ख्वाजा मौहम्मद मासूम ( .1668 ) के 9,00,000 ( नौ लाख ) शिष्य थे जिनमें से 7,000 उसके खलीफा बने अर्थात् जिन्होंने उनकी परम्परा में धर्म प्रचार और धर्म प्रसार के नाम पर असंख्य हिन्दुओं को मुसलमान बनाया । सर सययद '' अंसाल उल सनादीद '' में लिखते है। कि उनके यहाँ 500 व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करते थे । इसी बात से इन सूफी की आय का अन्दाजा लगाया जा सकता है ।**

19 वीं शताब्दी के मशहूर इसलामी प्रचारक और सिखों और अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र जेहाद करने वाले सययद अहमद शहीद के कारनामे तो कल्पनातीन लगते हैं लखनऊ के विश्व विख्यात मदरसे के भूपूर्व सर्वे सर्वा अी मियाँ के नाम से ख्यात सययद अबुल हसन अली नदवी लिखते हैं कि : '' जब सययद अहमद शहीद हज यात्रा के लिए कलकत्ता जा रहे थे तो मार्ग में पड़ने वाले ग्रामों में शायद ही कोई व्यक्ति बचा हो जिसने उनसे दीक्षा न ली हो ( उनके हाथों मुसलमान न बना हो ) । इलाहाबाद , मिर्जापुर , बनारस , गाजीपुर , पटना और कलकत्ता में तो विशेष तौर पर ऐसे लोगों की संख्या लाखों में होगी । बनारस में सदर अस्पताल के रोगियों ने उनन्हें समाचार भिजवाया कि वह उनके पास आने में असमर्थ हैं इसलिए बड़ी कृपा होगी यदि सययद साहब स्व्यं अस्पताल आकर उन्हें दीक्षा दे दें ।

**कलकत्ता में उनका निवास दोमास रहा और लगभग 1000 व्यक्ति प्रतिदिन उनसे दीक्षा लेते रहे ।** दीक्षा के कार्यक्रम जब समय की तंगी मालूम होने लगी तो यह उपाय किया गया कि एक बड़े मकान में लोगों को जमा किया जाता था । फिर सात लम्बी चौड़ी पगड़ी धरती पर बिछा दी जाती थी । लोग उन पगड़ियों के सिरों को पकड़ लेते थे । **फिर सययद साहब उस पगड़ी के एक सिरे को पकड़कर उनसे कलमा पढ़वा लेते थें** । इसके पश्चात यही क्रम दूसरी पगड़ियों पर बारी बारी से चलता रहता था। अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दू संख्या का कितना बड़ा

भाग एक सूफी सन्त द्वारा मुसलमान बनाया गया । कलमा पढ़वाना निश्चय ही मुसलमान बनाना है।
**सययद अथर अब्बास बहराइच के शहीद सलार मसूद गाजी की दरगाह के विषय में आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखते हैं कि उसकी मजार पर जाकर उसकी पूजा करने वाले लाखों हिन्दुओं के लिए यह बिल्कुल महत्तवपूर्ण नहीं है कि उसने उनके कितने पूर्वजों का ( इस्लाम स्वीकार न करने पर ) वध किया था ।**
योग्य है

हिन्दू तुम वास्तव में धन्य हो जिनका ध्येय ही तुमको जड़मूल से मिटाना था और धन्य हैं हिन्दू समाजके वे लाखों साधु संन्यासी , जगद्गुरू , भगवान , सद्गुरू और राजनीतिक नेता जो इन अनभिज्ञ लोगों को इस प्रकार की पूजा से विरत करने का कोई प्रयास नहीं करते ˙ उल्टे उन्हें समझाते रहते है कि सभी धर्म समान हैं । सूफी संत भी हिन्दू संतों ऋषियों के समान ही ईश्वर भक्त है। ऐसे समाज के नष्ट हो जाने में क्या सन्देह हो सकता है ?
**अपूज्याः यत्र पूज्यन्ते पूज्यानाम् च निरादरः ।**
**त्रीणि तत्र प्रविशन्ति , दुर्भिक्षं , मरणं भयम् ।।**
जो उनकी पूजा करते है। जो पूजा के योग्य नहीं हैं और उनका निरादर करते हें जो पूजा के योग्य है। उनका तो अभाव और भयग्रस्त होना और मरना निश्चिय ही है ।